CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० युवराज वशिष्ठ

रुद्रीपाठ का विविध फल

...Scanned...

रुद्रीसंख्याफलं देवि श्रृणुष्व वदतो मम ।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत् ।
स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥
ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥
नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।
राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥
रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ।
शत्रुश्च पञ्चमी रुद्रैस्तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौख्यं स्यात्सप्तमी रुद्रैः शिवमाप्नोति मानवः ।
नवरुद्रैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुतान्वितः ॥ ८ ॥
राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम् ॥ ९ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रियै ।
राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ १० ॥
त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यसाधनाय च ।
पञ्चभिश्च महारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ ११ ॥
सप्तभिश्च महारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ १२ ॥
अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं प्राप्नुयान्नरः ।
डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १३ ॥
भूतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
ग्रहदोषदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्वरातिसारदोषादौ वातपित्तकफादिषु ।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिर्न संशयः ॥ १४ ॥
सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।
सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥

भगवान् शिव ने पार्वती से रुद्री के पाठ का फल इस प्रकार कहा है-शिवपूजक सर्वप्रथम संकल्प कर अङ्गन्यास करे। पश्चात शिव को पञ्चामृत से स्नान करावे और ध्यानपूर्वक जप करे। रुद्री के एक पाठ से बाल ग्रहों की शान्ति, तीन पाठ से उपसर्ग (उपद्रव) की शान्ति, पाँच पाठ से ग्रहों को शान्ति, सात पाठ से महाभय को शान्ति, नव पाठ से सर्वविध शान्ति और वाजपेय यज्ञ की फल-प्राप्ति, ग्यारह पाठ से राजा का वशीकरण और विविध विभूतियों की प्राप्ति होती है। तीन रुद्रों से कामना की सिद्धि और शत्रुओं का नाश, पाँच रुद्रों से शत्रु और स्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का वशीकरण, सात रुद्रों से सुखप्राप्ति, नव रुद्रों से पुत्र-पौत्र और धन-धान्य की समृद्धि होती है। एक महारुद्र से राजभय का नाश, शत्रु का उच्चाटन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश, आरोग्य, यश और श्रीकी प्राप्ति तथा राजा से वृद्धि प्राप्त होती है। तीन महारुद्रों से असाध्य कार्य की सिद्धि, पाँच महारुद्रों से राज्यकामना की सिद्धि, सात महारुद्रों से सप्तलोक की सिद्धि, नव महारुद्रों से पुनर्जन्म की निवृत्ति होती है। एक अतिरुद्र से देवत्व की प्राप्ति, डाकिनी आदि से भय की निवृत्ति, तीन अतिरुद्र से भूतादिकों से भय की निवृत्ति, पाँच अतिरुद्र से ग्रहदोष की शान्ति, सात अतिरुद्र से ज्वर, अतिसार, वात, पित्त, कफ आदि दोषों की शान्ति, नव अतिरुद्र से सर्वार्थसिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ग्यारह अतिरुद्र से समस्त प्रकार की शान्ति होती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राभिषेक के लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल

लिख्यते च मया द्रव्यमभिषेकात्मकं परम् ।
जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ॥ १ ॥
दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ।
मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ॥ २ ॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना ॥ ३ ॥
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥ ४ ॥
धृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ५ ॥
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम् ।
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ६ ॥
शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ ७ ॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ८ ॥
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ।
जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥ ९ ॥
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा ।
महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा ॥ १० ॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम् ।

मैं भगवान् शङ्कर के अभिषेकात्मक श्रेष्ठ द्रव्यों को लिखता हूँ। जल से वर्षा, कुशा के जल से शान्ति, दही से पशु-प्राप्ति, ईख के रस से लक्ष्मी-प्राप्ति, मधु और घी से धन, तीर्थ से मोक्ष, दुग्ध से पुत्र-प्राप्ति अथवा वन्ध्या, काकवन्ध्या मृतवत्सा स्त्री को दुग्ध से शीघ्र पुत्र-प्राप्ति, जल की धारा से ज्वर-शान्ति, एक हजार मन्त्रों के सहित घृत की धारा से वंश-विस्तार, केवल दुग्ध की धारा से प्रमेह रोग की शान्ति और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनोवाञ्छा की पूर्ति, शक्कर मिले हुए दूध से जड़-बुद्धि का निर्मल होना, सरसों के तेल से शत्रु का नाश तथा रोग का नाश और शहद से यक्ष्मरोग की शान्ति तथा पाप का क्षय होता है। पाप क्षय की इच्छा वाले को दुग्ध से, लक्ष्मी की कामना वाले को ईख (गन्ने) के रस से और पुत्रार्थी को चीनी से मिश्रित जल से भगवान् सदाशिवजी का अभिषेक करना चाहिये। महालिङ्ग का उपर्युक्त द्रव्यों से अभिषेक करने से शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तों की तत्तत् कामनाओं को पूर्ण करते हैं। अतः भक्तों को चाहिये कि वे यजुर्वेदविहित विधान से रुद्रों का अभिषेक करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवपूजनविधिः

शिवपूजनकर्ता स्नान-सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर पवित्र स्थान में पूजन-सामग्री को अपने सम्मुख रख के कुशा आदि के पवित्र आसन पर बैठें। पश्चात् ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इस प्रकार आचमन करके फिर तीन बार प्राणायाम करें। अनन्तर इस प्रकार विनियोग करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिर्विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ कर पूजन-सामग्री के ऊपर और अपने ऊपर जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्चात इस प्रकार विनियोग करें-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण कर आसन पर जल छिड़कें-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्

पश्चात अपने शरीर की शुद्धि के लिये सर्वप्रायश्चित करें। सर्वप्रायश्चित का सङ्कल्प इस प्रकार है।

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) करिष्यमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इस प्रकार सङ्कल्प कर तण्डुलों से परिपूर्ण ताम्र के पात्र में कुंकुम से अष्टदल पद्म का निर्माण कर उसके ऊपर गोमयमयी गौरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और फलमय गणेश को स्थापित कर अपने हाथ में अक्षत एवं पूष्प लेकर गणेश जी का ध्यान कर ॐ आनो भद्राः० इत्यादि मङ्गलमन्त्रों को पढ़ें। अनन्तर हाथ में जल और अक्षत लेकर संङ्कल्प करें।

सङ्कल्पः-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यातवर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठ्यब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकं आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्त्यर्थम्, आयुरोग्यैश्वर्यादि-वृद्ध्यर्थम्, श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं च धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-सिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये नार्मदशिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) यथोपचारैः शिवपूजनपूर्वकं दुग्धधारया जलधारया वा एकादशब्राह्मणद्वारा (अमुकसंख्याकब्राह्मणद्वारा) सकृद्रुद्रावर्तनेन रुद्रैकादशिन्या वा महारुद्रेण अभिषेकाख्यं कर्म करिष्ये। (तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादिपूजनं च करिष्ये)। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करने के बाद षडङ्गन्यास करें।

षडङ्गन्यासः- मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं य्यज्ञᳪं समिमं दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्टिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबोंद्ध्यग्निः समिधा जनांनां प्रतिं धेनुमिंवा यतीमुषासंम्।
सह्वा ऽइंव प्प्रवया मुज्जिहांनाः प्प्रभानवंः सिस्रते नाकमच्छं ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअंरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्।
कविꣳ सम्म्राजमतिंथिं जनांनामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमंस्त्वा राजामृतेनानु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्श्वतोबाहुरुत विश्वतस्प्पात्। सं बाहुब्भ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवतान्यासः-ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरं मो तं मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥

गणपतिपूजनम् - ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठं हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठं हवामहे व्वसो मम। आहमंजानि गर्ब्भधमा त्वमंजासि गर्ब्भधम् ॥

इस प्रकार षोडशोपचार अथवा यथोपचार से गणेश जी का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्श्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

अम्बिकापूजनम् - ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मां नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

इस प्रकार यथोपचार से अम्बिका का पूजन करके नीचे लिखी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रार्थना करें-

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

नन्दीश्वरपूजनम् - ॐ आशुःशिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः।

इस प्रकार यथोपचार से नन्दीश्वर का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ प्रेतु व्वाजी कनक्रदन्नानदद्रासभः पत्त्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्रपूजनम् - ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

इस प्रकार यथोपचार से वीरभद्र का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भद्रो नो ऽअग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो ऽअध्वरः भद्रा ऽउत प्रशस्तयः ॥

स्वामिकार्तिकपूजनम्—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्॥

इस प्रकार यथोपचार से स्वामिकार्तिक का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा ऽइव। तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु॥

कुबेरपूजनम्—ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति॥

इस प्रकार यथोपचार से कुबेर का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ वयᳬ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीर्तिमुखपूजनम्—ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥

इस प्रकार यथोपचार से कीर्तिमुख का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म च मेऽङ्गानि च मेस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म ऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

शिव की जलहरी में यदि सर्प का आकार बना हो तो प्रथम सर्प का पूजन करके पश्चात् शिव का पूजन करें।

सर्प का पूजन निम्नलिखित मन्त्र से करें–

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्चात् शिव का पूजन इस प्रकार श्रद्धा-भक्ति से करें-

**ध्यान-ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥**

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि।

आवाहन-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः॥

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रं महाद्युतिम्। गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

**आसन-ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर। मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्राणप्रतिष्ठा-ॐ मनों जूतिर्ज्जुंषतामाज्यंस्य बृहस्पतिंर्य्यज्ञमिम ÷ तंनो त्वरिंष्टंय्यज्ञठं० समिमन्दंधातु। विश्वें देवासं ऽइहमांदयन्तामोंऽ३ प्रतिंष्ठ ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्राणंप्रतिष्ठापयामि। ततः पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। अर्घ्याङ्गमाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पाद्य-ॐ यामिषुंङ्गिरिश न्तहस्तोंबिभर्ष्य स्तंवे।
शिवाङ्गिंरित्र ताङ्कुंरुमाहिंᳫसीः पुरुंषञ्जगंत् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य- ॐ शिवेनव्वचंसात्त्वागिरि शाच्छां व्वदामसि। यथांनः सर्व्वमिज्जगं दयक्ष्मᳬसुमनाऽअसत् ॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन- ॐ अद्ध्यंवोचदधिवक्ताप्प्रंथमो दैव्व्योंभिषक् ॥ अहींश्च्च सर्व्वाञ्जभयन्त्सर्व्वांश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीᳬ परांसुव ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्क- ॐयन्मधुनो मधव्यं परमठं० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मध्व्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव शङ्कर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नान– ॐ असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेडऽ ईमहे ॥

गङ्गा–सरस्वती–रेवा–पयोष्णी–नर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव ततः शातिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नान– ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान-ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ ऽअकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य वा॒जिनः॑।
सु॒रभिनो॒ मुखा॑ कर॒त्प्रण॒ ऽआयू॑ꣳषि तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं-ॐ घृतं मि॑मिक्षे घृतम॑स्य॒ योनि॑र्घृते श्रि॒तो घृतम्व॑स्य॒ धाम॑।
अ॒नु॒ष्व॒धमा व॑ह मा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतं वृषभ वक्षि ह॒व्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुस्नान-ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्यः । माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् । मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नान-ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳरसस्य यो रसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान–ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि धृतं मधु। शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान–ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा। सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नान–पश्चात् शिव की मूर्ति पर ॐ नमस्ते० (१–१६)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस रुद्रसूक्त से जलधारा द्वारा अभिषेक करें।

गन्धोदकस्नान-ॐ त्वांगंन्धर्व्वा ऽअंखनँ स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिं÷। त्वामोंषधे सोमो राजां विद्वान्यक्ष्मांदमुच्यत॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्। चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। अचमनीयं जलं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नान-ॐ अꣳशुनां ते अꣳशुः पृंच्च्यतां परुंषा परुं÷। गन्धस्ते सोमंमवतुमदांयरसोऽअच्च्युतः॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि। उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

विजयास्नान-ॐ विज्ज्य न्धनुं÷कपर्द्दिनो विशंल्ल्योबाणंवाँ२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऽउत ॥ अनेशन्नस्यषा ऽइषंवऽआभुरंस्यनिषङ्गधिः ॥

शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम्।

विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि। विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र-ॐअसौयोंऽवसर्प्पतिनीलंग्ग्रीवो व्विलोंहितः ॥

उतैनंङ्गोपाऽअंदृश्श्रन्नदृंश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृंड यातिनः ॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-ॐ नमोंऽस्तुनीलंग्ग्रीवायसहस्त्रा क्षायंमीढुषें॥

अथोयेऽअंस्यसत्त्वांनोऽहन्ते ब्भ्योंऽकरन्नमंः ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्र—ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथ मा संदत्स्वः। व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व व्विभावसो॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्ध (चन्दन)— ॐ प्रमुंञ्च धन्न्वंनस्त्वमुभयोरात्क्न्योंर्ज्ज्याम्॥ याश्च्चंतेहस्त ऽइषंवः परा ता भंगवोव्वप॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

भस्म—ॐ प्रसद्य भस्मंना योनिंमपश्श्च पृथिवीमंग्ने। सर्ठ० सृज्ज्यं-मातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिंष्मान् पुनरासंदः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्। सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्म समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अक्षन्नमींमदन्त ह्यवं प्प्रिया ऽअंधूषत।
अस्तोंषतस्वभांनवो व्विप्प्रा नविंष्ठुया मती योजान्विन्द्रते हरीं॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला—ॐओषंधीः प्प्रतिंमोदध्वम्पुष्पंवतीः प्रसूवंरीः।
अश्वांऽइव सजित्त्वंरीर्व्वीरुधंः पारयिष्ण्वः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्र—ॐ नमोंबिल्मिने चकवचिनेंच नमोंव्वर्म्मिणें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चव्वरूथिनेचनमः श्रुतायचश्रुत सेनायचनमोदुन्दुब्भ्यायचाह नन्यायचनमोधृष्णवे॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ १ ॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवदर्शनम्। कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ २ ॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ ३ ॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम्। कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ ४ ॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वरः। सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥ ५ ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥ ६ ॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम्। पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरम ॥ ७ ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः। त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ८ ॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम्। तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥ ९ ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकदश बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुर—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्। गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजा—गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से भगवान शिव की इस प्रकार अङ्गपूजा करें—

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥
ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि ॥ २ ॥
ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ३ ॥
ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि ॥ ४ ॥
ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥ ५ ॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥ ७ ॥

ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥ ८ ॥

ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ९ ॥

ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ १० ॥

ॐ शिवत्मने नमः मुखं पूजयामि ॥ ११ ॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥ १२ ॥

ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥ १३ ॥

ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ १४ ॥

आवरणपूजा—ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥ ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाय नमः ॥४॥ ॐ विश्वरूपाय नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥ ॐ भैरवाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥ ॐ महेशाय नमः ॥११॥

एकादशशक्तिपूजा—ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥ ॐ काल्यै नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥ ॐ कोटर्यै नमः ॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥ ॐ ह्रां नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥

गणपूजा—ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥ ॐ भैरवाय नमः ॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥८॥ ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः ॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा—ॐ क्षितिमूर्तये नमः ॥१॥ ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः ॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥५॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥६॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥७॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकादश रुद्रपूजा—ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥ ॐ शर्वाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥७॥ ॐ भैरवाय नमः ॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम पूजा (शिव के १०८ नामों से पुष्प, अक्षत आदि से शिव-पूजन करें)—

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥ ॐ शम्भवे नमः ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥ ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥६॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥ ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥१४॥ ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥१५॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥१६॥ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥ ॐ भवाय नमः ॥१८॥ ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकीशाय नमः ॥२०॥ ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥ ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥२४॥ ॐ कामारये नमः ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥२६॥ ॐ गङ्गाधराय नमः ॥२७॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥ ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥ ॐ कृपानिधये नमः ॥३०॥ ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय नमः ॥३२॥ ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥ ॐ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलासवासिने नमः ॥३५ ॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६ ॥ ॐ कठोराय नमः ॥३७ ॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८ ॥ ॐ वृषाङ्काय नमः ॥३९ ॥ ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४० ॥ ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥४१ ॥ ॐ सामप्रियाय नमः ॥४२ ॥ ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३ ॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥४४ ॥ ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५ ॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६ ॥ ॐ परमात्मने नमः ॥४७ ॥ ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः ॥४८ ॥ ॐ हविषे नमः ॥४९ ॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५० ॥ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ॥५१ ॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५२ ॥ ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५३ ॥ ॐ वीरभद्राय नमः ॥५४ ॥ ॐ गणनाथाय नमः ॥५५ ॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥५६ ॥ ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५७ ॥ ॐ दुर्द्धर्चाय नमः ॥५८ ॥ ॐ गिरीशाय नमः ॥५९ ॥ ॐ गिरिशाय नमः ॥६० ॥ ॐ अनघाय नमः ॥६१ ॥ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२ ॥ ॐ भर्गाय नमः ॥६३ ॥ ॐ गिरिधन्वने नमः ॥६४ ॥ ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५ ॥ ॐ अष्टमूर्त्तये नमः ॥६६ ॥ ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७ ॥ ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ शुभविग्रहाय नमः ॥६९ ॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥७० ॥ ॐ खण्डपरशवे नमः ॥७१ ॥ ॐ अजाय नमः ॥७२ ॥ ॐ पाशविमोचाय नमः ॥७३ ॥ ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥७४ ॥ ॐ पुरारातये नमः ॥७५ ॥ ॐ भगवते नमः ॥७६ ॥ ॐ प्रथमाधिपाय नमः ॥७७ ॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥७८ ॥ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७९ ॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥८० ॥ ॐ जगद्गुरवे नमः ॥८१ ॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥८२ ॥ ॐ महासेनाय नमः ॥८३ ॥ ॐ जनकाय नमः ॥८४ ॥ ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥८५ ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥८६ ॥ ॐ भूतपतये नमः ॥८७ ॥ ॐ स्थाणवे नमः ॥८८ ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८९ ॥ ॐ दिगम्बराय नमः ॥९० ॥ ॐ मृडाय नमः ॥९१ ॥ ॐ पशुपतये नमः ॥९२ ॥ ॐ देवाय नमः ॥९३ ॥ ॐ महादेवाय नमः ॥९४ ॥ ॐ अव्ययाय नमः ॥९५ ॥ ॐ हरये नमः ॥९६ ॥ ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९७ ॥ ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९८ ॥ ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥९९ ॥ ॐ अव्यग्राय नमः ॥१०० ॥ ॐ अव्यक्ताय नमः ॥१०१ ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥१०२ ॥ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥१०३ ॥ ॐ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्राक्षाय नमः ॥१०४॥ ॐ तारकाय नमः ॥१०५॥ ॐ हराय नमः ॥१०६॥ ॐ सहस्रपदे नमः ॥१०७॥ ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥१०८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ रुद्राभिषेकादिविधिः

ब्राह्मणवरण—शिवपूजन करने के बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणों का वरण करें। वरण के लिये शिवपूजक सर्वप्रथम ब्राह्मणों का पाद-प्रक्षालन करें। पश्चात् ब्राह्मणों के मस्तक में तिलक लगावें, फिर चावल लगावें। पश्चात् उनको पुष्पमाला पहनावें। अनन्तर अपने दाहिने हाथ में वरण की सामग्री अथवा वरण-सामग्री के निमित्त द्रव्य लेकर इस प्रकार संकल्प करे—

'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम् अमुकगुप्तोऽहम्) सङ्कल्पिते रुद्राभिषेककर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः पाठकरणार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे' अथवा—'अमुकामुकगोत्रान्नानाशर्मब्राह्मणान् युष्मान् वृणे'।

एक ब्राह्मण हो तो 'वृतोऽस्मि' कहें और यदि अधिक ब्राह्मण हों तो 'वृताः स्मः' इस प्रकार कहें। पश्चात् 'ॐ यदा बध्नन्०' इस मन्त्र के द्वारा ब्राह्मणों के दाहिने हाथ में रक्तसूत्र (मौली) से रक्षबन्धन करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मणों का वरण करने के बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणों से अभिषेक प्रारम्भ करने के लिये प्रार्थना करें। पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ मनो जूतिः' इत्यादि छः मन्त्रों से षडङ्गन्यास कर रुद्राभिषेक प्रारम्भ करें।

उत्तरपूजन—अभिषेक करने के बाद शिवपूजनकर्ता शिवजी का षोडशोपचार से पूजन करें। पश्चात् सङ्कल्पपूर्वक ब्राह्मणों को अभिषेक की दक्षिणा और भूयसी दक्षिणा दें। अनन्तर संकल्पपूर्वक ब्राह्मणों को भोजन करावें अथवा भोजन के निमित्त द्रव्य देवें। पश्चात् शिवपूजनकर्ता 'आवाहनं न जानामि०' इत्यादि द्वारा भगवान् शिवजी से क्षमा-प्रार्थना करें।

यजमान का अभिषेक—पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ द्यौः शान्तिः०। ॐ आपो हिष्ठा०। ॐ यो वः। ॐ तस्मा ऽअस्म्०। ॐ वतोयतः। ॐ व्विश्वानि देव सवितः०' इत्यादि मन्त्रों के द्वारा यजमान का अभिषेक करें।

देवविसर्जन—अभिषेक होने के बाद आचार्य 'यान्तु देवगणाः सर्वे०' इत्यादि के द्वारा देवताओं का विसर्जन करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षा-बन्धन—पश्चात् आचार्य 'ॐ यदा बध्नन्०' इस मन्त्र के द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में और उनकी पत्नी के बाएँ हाथ में रक्षा-बन्धन करें।

तिलक—अनन्तर आचार्य अपने हाथ में फल और अक्षत लेकर 'ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रः०' इस मन्त्र से यजमान के मस्तक में तिलक करें। पश्चात् आचार्य 'ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या० ॥१॥ ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे० ॥२॥ ॐ व्विवस्वन्नादित्यैषते० ॥३॥' इत्यादि मन्त्रों को पढ़कर यजमान को आशीर्वाद दें।

इति रुद्राभिषेकादिविधिः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवपूजन-सामग्री

रोली	ऋतुफल	फुटकर पुष्प
मौली	अतरकी शीशी	बिल्वपत्र
धूपबत्ती	यज्ञोपवीत	दूर्वा
केशर	गोबर	तुलसी
कपूर	गोमूत्र	धतूरे के फूल और फल
रूई	दुग्ध	मदार का पुष्प
सिन्दूर	दही	चन्दन
अवीर (गुलाल)	घृत	गङ्गाजल
बुक्का (अभ्रक)	शहद	कुशा
चावल	चीनी	नारियल
पान	छोटी इलायची	शिवजी के लिये धोती
सुपारी	लवङ्ग	शिवजी के लिये
पेड़ा	पुष्पमाला	अंगोछा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिषेकपात्र	लोटा (पूजनार्थ)	अंगोछा
थाली (पूजनार्थ)	रुद्राक्षमाला	यज्ञोपवीत
कटोरी (पूजनार्थ)	मिट्टी के सकोरे	कुशासन आदि
पञ्चपात्र (पूजनार्थ)	ब्राह्मणों की वरण सामग्री	ब्राह्मणों के लिये मिष्ठान
आचमनी (पूजनार्थ)	धोती	ब्राह्मणों के लिये दक्षिणा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीः ॥

अथ शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥ १ ॥ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्त्य नुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्त्युष्णि हाक्कुप्प्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥ २ ॥ द्विपदाषा श्च्चतुष्प्पदास्त्रि पदाषाश्च्चषट्पदाꣳ ॥ व्विच्छन्दाषाश्च्चसच्छन्दाꣳसूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥ ३ ॥ सहस्तोमाꣳ सहछन्दस ऽआवृतः सहप्प्रमा ऽऋषयꣳ सप्तदैव्व्याꣳ ॥ पूर्व्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽ अन्न्वाले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिरेरत्त्थ्युोनर शमीन् ॥ ४ ॥ ॐ यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्य
तथैवैति ॥ दू रङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरे कन्तन्मेमनं÷शिवसङ्क
ल्प्पमस्तु ॥ ५ ॥येनकर्म्माण्ण्यपसोमनी षिणोयज्ञे कृण्वन्तिंवि
दथेषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्मेमनं ÷ शिवसङ्कल्प्प
मस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तर मृतं प्प्रजासु ॥
यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनं÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु
॥ ७ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्ष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥
येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे मनं÷शिवसङ्कल्प्प मस्तु ॥ ८ ॥
यस्म्मिन्नृचः सामयजूंषियस्म्मि न्प्रतिष्ठितारथनाभा विवाराः ॥
यस्म्मिंश्चित्तः सर्व्वमोतं प्प्रजानान्तन्मेमनं÷शिवसङ्कल्प्प मस्तु ॥ ९ ॥
सुषारथिरश्श्वानिवयन्मनुष्ष्या न्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥
हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनं÷शिवसङ्कल्प्प मस्तु ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिं ॐ सहस्रंशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात् ॥
सभूमिंसर्व्वतंस्पृत्त्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदं
सर्व्वं यद्भूतंयच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानो
यदन्नेनातिरोहंति ॥ २ ॥ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः ॥
पादोऽस्य विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादू
र्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहा भवत्पुनः ॥ ततोविष्वङ्व्यू
क्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥ ४ ॥ ततोंविराडजायतवि
राजोऽअधिपूरुषः ॥सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्चाद्भू
मिमथोपुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पशूँस्ताँश्चचक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्या श्च्च्ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दाᳯंसिजज्ञिरे
तस्म्माद्यजुस्त स्म्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्म्मादश्श्वा ऽअजायन्त
येकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्मा ज्जाता ऽअजावयः
॥ ८ ॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः ॥ तेनदेवा ऽ
अयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च्च्ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्व्यदधुः
कतिधाव्व्यकल्प्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा
ऽउच्च्येते ॥ १० ॥ ब्ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्न्यः कृतः ॥
ऊरूतदस्य यद्द्वैश्यः पद्भ्याᳯं शूद्द्रो ऽअजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमामनसोजा तश्च्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत ॥ श्श्रोत्राद्वायुश्च्च
प्प्राणश्च्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षः
शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऽअंकल्प्पयन् ॥ १३ ॥यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतंन्वत ॥
व्वसन्तोऽस्यासी दाज्ज्यंङ्ग्रीष्मऽइद्ध्मःशरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यांसन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधं÷कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तंन्वाना
ऽअबंद्धन्पुरुंषम्पशुम् ॥ १५ ॥यज्ञेनंयज्ञमंयजन्तदेवास्तानि
धर्म्माणि प्प्रथमान्न्यांसन् ॥ तेहनाकंम्महिमानं÷सचन्तयत्रपूर्व्वे
साद्ध्याःसन्तिदेवाः ॥ १६ ॥ अद्भ्यःसम्भृंतंः पृथिव्व्यैरसांच्च
व्विश्श्वकंर्म्मणः समंवर्त्ततागग्रे ॥ तस्यत्त्वष्टांव्विदधंद्रूपमे
तितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ग्रे ॥ १७ ॥ व्वेदाहमेतम्पुरुंष
म्महान्तंमादित्यवंर्ण्णन्तमंसःपरस्तांत् ॥ तमेवव्विंदित्त्वातिंमृत्यु
मेतिनान्न्यःपन्थांव्विद्यतेऽयंनाय ॥१८ ॥ प्प्रजापंतिश्च्चरति
गर्ब्भेंऽअन्तरजांयमानोबहुधाव्विजांयते ॥ तस्ययोनिम्पंरिपश्यन्ति
धीरास्तस्मिंन्हतस्त्थुर्ब्भुवंनानिव्विश्श्वां ॥ १९ ॥ योदेवेब्भ्यं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऽआतपंतिषोदेवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्व्वो षोदेवेब्भ्योजातोनमो रुचायब्राह्मये ॥ २० ॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदंब्रुवन् ॥ षस्त्वैवंब्राह्मणोविद्यात्तस्यदेवाऽअंसन्वशे ॥ २१ ॥ श्रीश्च्चते लक्ष्मी श्च्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ २२ ॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आशुःशिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभण श्च्चार्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽ अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्त्कारेण दुश्च्च्यवनेनधृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयततत्सहद्ध्वंयुधो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नरऽइषुहस्तेनवृष्ष्णा ॥ २ ॥ सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसᳪ
स्त्रंष्ट्टासयुधऽइन्द्रोगणेन ॥ सᳪ सृष्ट्टजित्सोमपाबाहुशर्द्धर्युं
ग्ग्रधन्न्वाप्प्रतिंहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृहस्प्पतेपरिदीयारथेनर
क्षोहामित्राँ२ ॥ ऽअपबाधमानः ॥ प्प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधा
जयन्नस्म्माकमेद्ध्यविताथानाम् ॥ ४ ॥ बलविज्ञायस्स्थविरः
प्प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥ अभिवीरोऽअभिसंत्त्वा
सहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गोत्रभिदङ्गो
विदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमᳪ सजाताऽ
अनुवीर यद्ध्वमिन्द्रᳪ सखायोऽअनुसᳪ रभद्ध्वम् ॥ ६ ॥
अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः ॥
दुश्च्व्यवनः पृतनाषाड युद्ध्योऽस्माकᳪ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥ ७ ॥
इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोषन्त्वग्ग्रम् ॥ ८ ॥
इन्द्रस्य व्वृष्ष्णो व्वरुणस्य राज्ञऽआदित्या-नाम्मरुताᳫं
शर्द्धऽउग्ग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयन्ता
मुदस्थात् ॥ ९ ॥ उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्त्वं नाम्मामका-
नाम्मनाᳫंसि ॥ उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजि-नान्युद्रथानाञ्जय
तांऽषन्तुघोषाः ॥ १० ॥ अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजे
ष्ष्वस्म्माकंऽषाऽइषवस्ताजयन्तु ॥ अस्म्माकंव्वीराऽउत्तरे
भवन्त्वस्म्माँ२ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रति
लोभयन्तीगृहाणाङ्गान्न्यप्वे परेहि ॥ अभिप्प्रेहिनिर्दहहृत्सुशोकैरन्धेना
मित्त्रास्तमसासचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टापरापतशरव्व्ये
ब्ब्रह्मसᳲशिते ॥ गच्छामित्त्रान्प्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः
॥ १३ ॥ प्रेता जयतानरऽइन्द्रोवः शर्म्मषच्छतु ॥ उग्ग्रावः सन्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बाहवोनाधृष्ष्याथथासथ ॥ १४ ॥ असौयासेना मरुतः परेषामब्भ्यै
तिनऽओजसास्प्पर्द्धमाना ॥ ताङ्गूहततमसापव्व्रतेनयथामीऽअन्न्यो
ऽअन्न्यन्नजानन् ॥ १५ ॥ यत्रबाणाः सम्प्पतन्ति कुमाराव्विशिखाऽ
इव ॥ तन्नऽइन्द्रो बृहस्प्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु व्विश्श्वा
हाशर्म्मयच्छतु ॥ १६ ॥ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा
राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वा
नुदेवामदन्तु ॥ १७ ॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ व्विब्भ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मध्वायुर्द्दधद्यज्ञपता
वविहुतम् ॥ व्वातजूतोयो ऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्वि
राजति ॥ १ ॥ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्ति केतवः ॥ दृशेव्विश्श्वाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूर्य्यम् ॥ २ ॥ येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ ॥ऽअनु ॥
त्वंव्वरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्यावद्ध्वर्यूऽआगतᳬरथेन
सूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञᳬसमञ्जाथे ॥तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्त्र
न्देवानाम् ॥ ४ ॥तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथाविश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतां
तिम्बर्हिषदᳬस्वर्व्विदम् ॥ प्प्रतीचीनंव्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्त
मनुयासुव्वर्द्धसे ॥ ५ ॥ अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायू
रजसोव्विमाने ॥ इममपाᳬसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नव्विप्प्रामतिभी
रिहन्ति ॥ ६ ॥ चित्त्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्त्रस्य
व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षᳬसूर्य्यऽ
आत्त्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ७ ॥आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्ति
व्विश्वानरᳬसविता देवऽएतु ॥ अपियथायुवानोमत्सथानो
व्विश्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा ॥ ८ ॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिसूर्य्य ॥सर्व्वन्तादिन्द्रते व्वशे ॥९ ॥तरणिर्व्विश्वदर्शतो
ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्वमाभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्य
देवत्वन्तन्महित्वम्मद्धयाकर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार ॥
यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै ॥ ११ ॥
तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्थे ॥
अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितꣳ सम्भरन्ति ॥ १२ ॥
बण्णमहाँ२ ॥ ऽअसिसूर्य्य बडादित्त्य महाँ२ ॥ऽअसि ॥
महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२ ॥ ऽअसि ॥ १३ ॥
बट्सूर्य्यश्रवसामहाँ२ ॥ऽ असिसत्रादेवमहाँ२ ॥ऽअसि ॥
मह्नादेवानामसुर्य्यः पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ॥ १४ ॥
श्रायन्तऽइवसूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्यभक्षत ॥व्वसूनिजाते
जनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥१५ ॥ अद्यादेवाऽ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदिंतासूर्र्व्वं-स्यनिरंहसंपिपृता निरवद्यात् ॥ तन्नोंमित्रो व्वरुणोमामहन्तामदितिंसिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ॥१६॥ आकृष्णेनरजंसाव्वर्त्तं मानोनिवेशयंन्नमृतम्मर्त्यंञ्च ॥हिरण्ययेन सवितारथेनादेवोयांतिभुवंनानिपश्यंन् ॥ १७ ॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिःॐ नमंस्तेरुद्रमन्यवंऽउतोतऽइषंवेनमंः ॥ बाहुभ्यां मुततेनमंः ॥ १ ॥ यातेंरुद्रशिवातनूरघोराऽपांपकाशिनी ॥ तयांनस्तन्वाशन्तंमयागिरिंशन्ताभिचांकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुं ङ्गिरिशन्तहस्तेंबिभर्ष्यस्तंवे ॥ शिवाङ्गिंरित्रताङ्कुरुमाहिंसीः पुरुषञ्जगंत् ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचंसात्त्वागिरि शाच्छांव्वदामसि ॥ यथांनःसर्व्वमिज्जगं दयक्ष्मंसुमनाऽअसंत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यंवोच

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥ अहीँश्च्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वा
श्च्चयातुधान्न्योऽधराचीः परासुव ॥ ५ ॥असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽ
उत बब्भ्रुःसुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः
सहस्त्रशोऽवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥ ६ ॥ असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवो
विलोहितः ॥ उतैनं ङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृड
यातिनः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षायमीढुषे ॥
अथोयेऽअंस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्प्रमुञ्च
धन्न्वनस्त्वमु-भयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ॥ याश्च्चतेहस्तऽ इषवः पराता
भगवोव्वप ॥ ९ ॥ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनो विशल्ल्योबाणवाँ२ ॥
ऽउत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥
यातेहेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्म्मान्विश्श्वत
स्त्वमयक्ष्म्मयापरि भुज ॥ ११ ॥ परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्वृणक्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वतं÷ ॥ अथोषऽइ षुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधे हितम् ॥ १२ ॥
अवतत्त्यधनुष्ट्वᳫंसहस्त्रा क्षशतेषुधे ॥ निशीर्ष्यशल्ल्यानाम्मुखा
शिवोनं÷सुमनाभव ॥ १३ ॥ नमंस्तऽआयु धायानाततायधृष्ष्णवे ॥
उभाब्भ्यामुततेनमो बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तं
मुतमानो ऽअब्भर्कम्मान्ऽउक्षन्तमुतमानंऽ उक्षितम् ॥
मानोव्वधीᳫं पितरम्मोतमातरम्मानं÷प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्र
रीरिषᳫं ॥ १५ ॥ मानंस्तोकेतनयेमान्ऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽ
अश्श्वेषु रीरिषᳫं ॥ मानोव्वीरान्नुद्द्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तᳫं
सदमित्त्वाहवामहे ॥ १६ ॥ नमोहिरंण्णयबाहवेसेनान्न्येदिशाञ्चपतये
नमोनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यᳫं पशूनाम्पतयेनमोनमं÷
शष्प्पिञ्जरायत्त्विषीमते पथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिने
पुष्टानाम्पतयेनमोनमोबब्भ्लुशाय ॥ १७ ॥ नमोबब्भ्लुशाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याधिनेऽन्नानाम्पतयेनमोनमोभवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमोनमो
रुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्यैव्वना
नाम्पतयेनमोनमोरोहिताय ॥ १८ ॥ नमोरोहितायस्थपतये
वृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये
नमोनमो मन्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घो
षायाक्रन्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥
नमःकृत्स्नायतयाधावतेसत्त्वनाम्पतयेनमोनमꣳसहमानाय
निव्व्याधिन ऽआव्व्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणे
ककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्यानाम्पत
येनमोनमोव्वञ्चते ॥ २० ॥ नमोव्वञ्चतेपरिवञ्चतेस्तायूनाम्पत
येनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्कराणाम्पतयेनमोनमः
सृकायिब्भ्योजिघांꣳसद्ब्भ्योमुष्णताम्पतयेनमोनमोऽसिमद्ब्भ्यो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥ २१ ॥
नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो
धन्वायिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्य
श्च वो नमो नमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो नमो
विसृजद्भ्यः ॥ २२ ॥ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्य
श्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमꣳ
शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्
भ्यश्च वो नमो नमः सभाभ्यः ॥ २३ ॥ नमः सभाभ्यः
सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो
नमो नमऽआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो
नमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः ॥ २४ ॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भ्यश्च्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्च्चवोनमोनमो
विरूपेभ्योविश्श्व रूपेभ्यश्च्चवोनमोनमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च्चवोनमोनमोरथिभ्योऽअरथेभ्य
श्च्चवोनमोनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च्चवोनमोन
मोमहद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च्चवोनमः ॥ २६ ॥नमस्तक्षभ्यो
रथकारेभ्यश्च्चवो नमोनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च्चवो
नमोनमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च्चवोनमोनमः
श्श्वनिभ्योमृगयुभ्यश्च्च वोनमोनमः श्श्वभ्यः ॥ २७ ॥नमः
श्श्वभ्यः श्श्वपति भ्यश्च्चवोनमोनमोभवायचरुद्द्रायचनमः
शर्व्वायचपशुपतयेच नमोनीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठा
यचनमः कपर्द्दिने ॥ २८ ॥ नमः कपर्द्दिने चव्युप्तकेशायच नमः
सहस्राक्षायचशतधन्वने च नमो गिरिशायाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चशिपिविष्टायचनमोमीढुष्टमायचेषुमतेचनमो ह्रस्वाय ॥ २९ ॥
नमो ह्रस्वायचव्वामनायच नमो बृहते च व्वर्षीयसे च नमो
व्वृद्धायचसवृधेचनमो ऽग्र्यायचप्प्रथमायचनमऽआशवे ॥ ३० ॥
नमऽआशवेचाजिरायचनमः शीग्घ्यायचशीब्भ्याय चनमऽ
ऊर्म्यायचावस्वन्यायचनमोनादेयायचद्द्वीप्प्यायच ॥ ३१ ॥
नमो ज्ज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमः पूर्व्वजायचापरजाय
चनमोमद्ध्यमायचापगल्भायचनमो जघन्यायच बुध्न्यायचनमः
सोब्भ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोब्भ्यायचप्प्रतिसर्य्यायचनमोया
म्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः श्लोक्क्यायचावसान्यायचनमऽ
उर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायचनमोव्वन्न्याय ॥ ३३ ॥ नमोव्वन्न्या
यचकक्ष्यायचनमः श्रवायचप्प्रतिश्रवायचनमऽ आशुषेणायचा
शुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिल्मिने ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणेचव्वरूथिनेचनमः
श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायचनमोदुन्दुभ्यायचाहनन्न्यायचनमो
धृष्ष्णवे ॥ ३५ ॥ नमोधृष्ष्णवेचप्प्रमृशायचनमोनिषङ्गिणे
चेषुधिमते चनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधाय
चसुधन्न्वनेच ॥ ३६ ॥ नमः स्रुत्यायचपथ्यायचनमः काट्यायच
नीप्प्यायचनमः कुल्यायचसरस्यायचनमोनादेयायचव्वैशन्ताय
चनमः कूप्प्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्प्यायचावट्यायचनमोव्वीध्र्या
यचातप्प्यायचनमोमेघ्यायचव्विद्युत्यायचनमोव्वर्ष्यायचा
व्वर्ष्यायचनमोव्वात्त्याय ॥ ३८ ॥ नमोव्वात्त्यायचरेष्म्या
यचनमोव्वास्तव्व्यायचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्रायचन
मस्ताम्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥ नमः शङ्गवेच
पशुपतयेचनमऽउग्ग्रायचभीमायचनमोऽग्ग्रेवधायचदूरेवधा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यंचनमोहन्त्रेचहनीयसेचनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यो
नमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमः शम्भवायचमयोभवायचनमः
शङ्करायचमयस्करायचनमः शिवायचशिवतरायच ॥ ४१ ॥
नमः पार्यायचावार्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणा
यचनमस्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमः शष्प्यायचफेन्यायचनमः
सिकत्याय ॥ ४२ ॥ नमः सिकत्यायचप्रवाह्यायचनमः
किंशिलायचक्षयणायचनमः कपर्दिनेचपुलस्तयेचनमऽ
इरिण्यायचप्रपथ्यायचनमोव्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमोव्रज्यायच
गोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्यायचनमोहृदय्यायचनिवेष्प्या
यचनमः काट्यायचगह्वरेष्ठायचनमः शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः
शुष्क्यायचहरित्यायचनमः पांसव्यायचरजस्यायचनमो
लोप्यायचोलप्यायचनमऽऊर्व्यायचसूर्व्यायचनमः पर्णाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ४५ ॥ नमः॑ पर्णाय॑ च पर्णश॒दाय॑ च॒ नमः॑ उद्गु॒रमा॑णाय चाभिघ्न॒ते
च॒ नमः॑ आखिद॒ते च॑ प्रखिद॒ते च॒ नमः॑ इषुकृद्भ्यो॑ धनु॒ष्कृद्भ्य॑
श्च वो॒ नम॒ो नमो॑ वः किरि॒केभ्यो॑ दे॒वाना॒ꣳ हृद॑येभ्यो॒ नमो॑
विचिन्व॒त्केभ्यो॒ नमो॑ विक्षिण॒त्केभ्यो॒ नमः॑ आनिर्ह॒
तेभ्य॑ः ॥ ४६ ॥ द्रापे॒ अन्ध॑सस्पते॒ दरि॑द्र॒ नील॑लोहित ॥ आ॒सां प्र॒
जानाम॒ेषां पशू॒नां मा भे॒र्मा रो॒ ङ्मो च॑ न॒ꣳ किञ्च॒नाम॑मत् ॥ ४७ ॥
इ॒मा रु॒द्राय॑ त॒वसे॑ कप॒र्दिने॑ क्ष॒यद्वी॑राय॒ प्रभ॑रामहे म॒तीः ॥ यथा॒शम
सद्द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे॒ विश्वं॒ पुष्टं॒ ग्रामे॑ अ॒स्मिन्न॑नातुरम् ॥ ४८ ॥
या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूः शि॒वा वि॒श्वाहा॑ भेष॒जी ॥ शि॒वा रु॒तस्य॑
भेषजी॒ तया॑ नो मृड ज॒ीवसे॑ ॥ ४९ ॥ परि॑ नो॒ रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु
परि॑ त्वे॒षस्य॑ दुर्म॒तिर॑घा॒योः ॥ अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒
मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय मृड ॥ ५० ॥ मीढु॑ष्टम॒ शिव॑तम शि॒वो न॑ः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमनांभव ॥परमेव्वृक्षऽआयुंधन्निधायकृत्तिंव्वसांनऽआचंर
पिनांकम्बिब्भ्रदागंहि ॥ ५१ ॥ व्विकिंरिद्द्रव्विलोंहितनमंस्तेऽअ
स्तुभगवः ॥यास्तेंसहस्त्रंहेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवं पन्तुताः ॥ ५२ ॥
सहस्त्रांणिसहस्त्रशोबाह्वोस्तवं हेतयंः ॥ तासामीशांनोभगवः
पराचीनामुखां कृधि ॥ ५३ ॥ असंङ्ख्यातासहस्त्रांणियेरुद्द्रा
ऽअधिभूम्म्यांम् ॥तेषांᳪसहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वांनि तन्न्मसि ॥ ५४ ॥
अस्म्मिन्न्महत्त्यंण्णर्वे ऽन्तरिंक्षेभवाऽअधिं ॥ तेषांᳪसहस्त्रयोजने
ऽवधन्न्वांनितन्न्मसि ॥ ५५ ॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवः
रुद्द्राऽउपंश्रिताः ॥ तेषांᳪसहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वां
नितन्न्मसि ॥ ५६ ॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः
क्षमाचराः ॥ तेषांᳪसहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वांनितन्न्मसि ॥ ५७ ॥
येव्वृक्षेषुंशष्प्पिञ्जंरा नीलंग्ग्रीवाव्विलोंहिताः ॥ तेषांᳪसहस्त्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५८ ॥ येभूतानामधिपतयो
व्विशिखासः कपर्दिनः ॥ तेषाँसहस्रयोजनेऽवध
न्वानितन्मसि ॥ ५९ ॥ येपथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्युधः ॥
तेषाँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६० ॥ येतीर्थानिप्प्र
चरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥ तेषाँसहस्रयोजनेऽ
वधन्वानितन्मसि ॥ ६१ ॥ येन्नेषुव्विविद्ध्यन्तिपात्रेषु
पिबतोजनान् ॥ तेषाँसहस्र योजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६२ ॥
यऽएतावन्तश्च्चभूयाँसश्च्चदिशोरुद्द्रा व्वितस्थिरे ॥
तेषाँसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोऽस्तुरुद्द्रे
ब्भ्योयेदिवियेषाँव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश
दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनो
ऽवन्तुतेनोमृडयन्तुते यन्द्विष्मोयश्च्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ६४ ॥ नमोँऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येँऽन्तरिक्षे येषांव्वातऽइषंवः ॥
तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशंदक्षिणा दशंप्प्रतीचीर्द्दशोदींचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ॥
तेब्भ्यो नमोँऽअस्तु ते नोँऽवन्तु ते नोँमृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो
यश्च्चंनोद्द्वेष्ट्टितमेंषाञ्जम्भेंदद्ध्मः ॥ ६५ ॥ नमोँऽस्तु रुद्रेब्भ्यो
येपृंथिव्व्यांय्येषामन्न मिषंवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशंदक्षिणादशं
प्प्रतीचीर्द्दशोदींचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोँऽअस्तुतेनोँऽवन्तुतेनोँ
मृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्च्चंनो द्द्वेष्ट्टितमेंषाञ्जम्भेंदद्ध्मः ॥ ६६ ॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

हरिः॑ ॐव्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनंस्तनूषुबिब्भ्रंतः ॥ प्प्रजावंन्त
ꣳसचेमहि ॥ १ ॥ एषतेंरुद्द्रभागःसहस्वस्राऽम्बिंकयातञ्जुषस्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाहैषतेरुद्द्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ २ ॥ अवरुद्द्रमदीमह्यव
वंदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथांनोव्वस्यंसस्करद्यथांनश्श्रेयंसस्करद्यथांनो
व्व्यवसाययांत् ॥ ३ ॥ भेषजमंसिभेषजङ्गवेऽश्वांयपुरुंषाय
भेषजम् ॥ सुखम्मेषायंमेष्ष्यै ॥ ४ ॥ त्र्यंम्बकंय्यजामहेसुगन्धि
म्पुंष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिंवबन्धंनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतांत् ॥
त्र्यंम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पंतिवेदंनम् ॥ उर्व्वारुकमिंवबन्धंना
दितोमुंक्षीयमामुतंः ॥ ५ ॥ एतत्तेंरुद्द्राऽवसन्तेनंपरोमूजंवतो
ऽतींहि ॥ अवंततधन्न्वापिनांकावसःकृत्तिं वासाऽअहिंसन्नःशिवो
ऽतींहि ॥ ६ ॥ त्र्यायुषञ्जमदंग्ग्नेः कश्यपंस्यत्र्यायुषम् ॥
यद्देवेषुंत्र्यायुषन्तन्नोंऽ अस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोनामांसिस्वधिं
तिस्तेपितानमंस्तेऽअस्तुमामांहिंसीः ॥ निवंर्त्तयाम्म्यायुंषेऽन्नाद्द्यां
यप्प्रजनंनायरायस्प्पोषांयसुप्प्रजा स्त्वायंसुवीर्य्यांय ॥ ८ ॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्ग्रश्च्चभीमश्च्चद्ध्वान्तश्च्चधुनिश्च्च ॥ सासह्वाँ
श्च्चाभियुग्ग्वाचव्विक्षिपꣳस्वाहा ॥ १ ॥ अग्ग्निꣳहृदयेनाशनिꣳ
हृदयाग्ग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवंय्यक्ना ॥ शर्व्वम्मतस्ना
भ्यामीशानम्मन्न्युनामहादेवमन्तꣳपर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवंव्वनिष्ठुना
व्वसिष्ठहनुꣳशिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ २ ॥ उग्ग्रँल्लोहितेनमित्रꣳ
सौव्व्रत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतोबलेनसाद्ध्या
न्प्रमुदा ॥ भवस्यकण्ठ्यꣳरुद्द्रस्यान्तꣳपार्श्व्यम्महादेवस्य
यकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुꣳपशुपतेꣳपुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमभ्भ्यꣳ
स्वाहालोमभ्भ्यꣳस्वाहात्त्वचेस्वाहात्त्वचेस्वाहालोहिताय
स्वाहालोहितायस्वाहामेदोभ्भ्यꣳस्वाहामेदोभ्भ्यꣳस्वाहा ॥
माꣳसेभ्भ्यꣳस्वाहामाꣳसेभ्भ्यꣳस्वाहास्नावभ्भ्यꣳस्वाहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नावंब्भ्यः स्वाहाऽस्त्थब्भ्यः स्वाहाऽस्त्थब्भ्यः स्वाहाम्मज्जब्भ्यः
स्वाहाम्मज्जब्भ्यः स्वाहा ॥ रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥
आयासायस्वाहाप्प्रायासायस्वाहासंव्यासायस्वाहाव्वियासाय
स्वाहोद्यासायस्वाहा ॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोचमानाय
स्वाहाशोकायस्वाहा ॥ ५ ॥ तपसेस्वाहातप्प्यतेस्वाहातप्प्यमानाय
स्वाहातप्तायस्वाहाघर्म्मायस्वाहा ॥ निष्कृत्यैस्वाहाप्प्रायश्चित्त्यै
स्वाहाभेषजायस्वाहा ॥ ६ ॥ यमायस्वाहाऽन्तकायस्वाहामृत्यवे
स्वाहा ॥ ब्ब्रह्मणेस्वाहाब्ब्रह्महत्यायैस्वाहाव्विश्श्वेब्भ्योदेवेब्भ्यः
स्वाहाद्यावा पृथिवीब्भ्याᳬ स्वाहा ॥ ७ ॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्याय: ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ अष्टमोऽध्यायः

हरिः॑ ॐ व्वाजश्च मे प्प्रसवश्च मे प्प्रयतिश्च मे प्प्रसितिश्च
मे धीतिश्च मे क्क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्श्लोकश्च मे श्श्रवश्च मे
श्श्रुतिश्च मे ज्ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ १ ॥
प्प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मऽ
आधीतञ्च मे व्वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे
बलञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च मे सहश्च मऽ
आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे
परूᳪषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्
॥ ३ ॥ ज्ज्यैष्ठ्यञ्च मऽआधिपत्त्यञ्च मे मन्न्युश्च मे भामश्च मे
ऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्प्रथि
मा च मे व्वर्षिमा च मे द्द्राघिमा च मे व्वृद्धञ्च मे व्वृद्धिश्च मे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ (न०) ॥ सत्त्यञ्चमेश्श्रद्धाचमेजगच्चमे
धनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्चमेक्क्रीडाचमेमोदश्चमेजातञ्च
मेजनिष्ष्यमाणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ५ ॥
ऋतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽयक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायु
त्वञ्चमेऽनमित्रञ्चमेऽभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्चमे
सुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्षेमश्चमे
धृतिश्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्चमेसंव्विच्चमेज्ञात्रञ्चमेसूश्चमे
प्रसूश्चमेसीरञ्चमेलयश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शञ्चमे
मयश्चमेप्प्रियञ्चमेऽनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनसश्चमे
भगश्चमेद्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्श्रेयश्चमेव्वसीयश्च
मेयशश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) ॥ ऊर्क्कच्चमे
सूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्ग्धिश्चमे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपीतिश्च्चमेकृषिश्च्चमे वृष्टिश्च्चमेजैत्रञ्चमऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्च्चमेरायश्च्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्च्चमे
विभुचमेप्रभुचमे पूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमे
ऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तञ्चमेवेद्यञ्चमे
भूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽ
ऋद्धिश्च्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्च्चमेमतिश्च्चमेसुमतिश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहयश्च्चमेयवाश्च्चमेमाषाश्च्चमेतिला
श्च्चमेमुद्गाश्च्चमेखल्वाश्च्चमेप्रियङ्गवश्च्चमेऽणवश्च्चमे
श्यामाकाश्च्चमेनीवाराश्च्चमेगोधूमाश्च्चमे मसूराश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ १२ ॥ (न०) अश्म्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्च्चमे
पर्वताश्च्चमेसिकताश्च्चमेवनस्प्पतयश्च्चमेहिरण्ण्यञ्चमेऽ
यश्च्चमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ १३ ॥ अग्ग्निश्च्चमऽआपश्च्चमेव्वीरुधश्च्चमऽओषधयश्च्च
मेकृष्ट्टपच्च्याश्च्चमेऽकृष्ट्टपच्च्याश्च्चमेग्ग्राम्म्याश्च्चमेपशव
ऽआरण्ण्याश्च्चमेव्वित्तञ्च्चमेव्वित्तिश्च्चमेभूतञ्च्चमेभूतिश्च्चमे
यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ १४ ॥व्वसुचमेव्वसतिश्च्चमेकर्म्मचमेशक्ति
श्च्चमेऽर्थश्च्चमऽएमश्च्चमऽइत्याचमेगतिश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) ॥ अग्ग्निश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेसोमश्च्चम
ऽइन्द्रश्च्चमेसविताचमऽइन्द्रश्च्चमेसरस्वतीचमऽइन्द्रश्च्च
मेपूषाचमऽइन्द्रश्च्चमेबृहस्प्पतिश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ १६ ॥ मित्रश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेव्वरुणश्च्चमऽ
इन्द्रश्च्चमेधाताचमऽइन्द्रश्च्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्च्चमे
मरुतश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेव्विश्श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ १७ ॥ पृथिवीचमऽइन्द्रश्च्चमेऽन्तरिक्षञ्च्चमऽ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रश्च्च मे द्यौश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे समाश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे
नक्षत्त्राणि च मऽइन्द्रश्च्च मे दिशश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे यज्ञेन
कल्पन्ताम् ॥१८॥ (न०) ॥अꣳशुश्च्च मे रश्मिश्च्च मेऽदा
भ्यश्च्च मेऽधिपतिश्च्च मऽउपाꣳशुश्च्च मेऽन्तर्या
मश्च्च मऽऐन्द्रवायवश्च्च मे मैत्रावरुणश्च्च मऽआश्विनश्च्च मे
प्प्रतिप्रस्थानश्च्च मे शुक्रश्च्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥
आग्ग्रयणश्च्च मे व्वैश्वदेवश्च्च मे द्ध्रुवश्च्च मे व्वैश्वानरश्च्च म
ऽऐन्द्राग्ग्नश्च्च मे महाव्वैश्वदेवश्च्च मे मरुत्त्वतीयाश्च्च मे निष्क्के
वल्यश्च्च मे सावित्त्रश्च्च मे सारस्वतश्च्च मे पात्क्नीवतश्च्च मे
हारियोजनश्च्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २० ॥ स्रुचश्च्च मे चमसाश्च्च
मे व्वायव्व्यानि च मे द्रोणकलशश्च्च मे ग्ग्रावाणश्च्च मेऽधिषवणे
च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च्च मे व्वेदिश्च्च मे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बर्हिंश्च्चामेऽवभृथश्च्चामे स्वगाकारश्च्चामे यज्ञेनं
कल्प्पन्ताम् ॥ २१ ॥ (न०) ॥ अग्निश्च्चंमेघर्म्मश्च्चांमेऽ
र्क्कश्च्चांमेसूर्य्यश्च्चामे प्प्राणश्च्चांमेऽश्वमेधश्च्चांमेपृथिवीचमे
ऽदिंतिश्च्चामेदितिंश्च्चामेद्यौश्च्चांमेऽङ्गुलंयःशक्क्वंरयो
दिशंश्च्चामेयज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्व्रतञ्चंमऽऋतवं
श्च्चमेतपंश्च्चमेसंव्वत्सरश्च्चंमेऽहोरात्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तरे
चंमेयज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २३ ॥ (न०) ॥ एकांचमेतिस्रश्च्चांमे
तिस्रश्च्चांमेपञ्चंचमेपञ्चंचमेसप्तचंमेसप्तचंमेनवंचमेनवंचम
ऽएकांदशचमऽएकांदशचमेत्रयोंदशचमेत्रयोंदशचमे
पञ्चंदशचमेपञ्चंदशचमे सप्तदंशचमेसप्तदंशचमेनवंदशचमे
नवंदशचम ऽएकंविꣳशतिश्च्चमऽएकंविꣳशतिश्च्चमे त्रयोंवि
ꣳशतिश्च्चामेत्रयोंविꣳशतिश्च्चामेपञ्चंविꣳशतिश्च्चामे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चविꣳशतिश्चमे सप्तविꣳशतिश्चमे सप्तविꣳशतिश्चमे
नवविꣳशतिश्चमे नवविꣳशतिश्चमऽएकत्रिꣳशच्चम
ऽएकत्रिꣳशच्चमे त्रयस्त्रिꣳशच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥
(न०) ॥ चतस्रश्चमेऽष्टौचमेऽष्टौचमे द्वादशचमे द्वादशचमे
षोडशचमे षोडशचमे विꣳशतिश्चमे विꣳशतिश्चमे
चतुर्विꣳशतिश्चमे चतुर्विꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳ
शतिश्चमे द्वात्रिꣳशच्चमे द्वात्रिꣳशच्चमे षट्त्रिꣳशच्चमे
षट्त्रिꣳशच्चमे चत्वारिꣳशच्चमे चत्वारिꣳशच्चमे
चतुश्चत्वारिꣳशच्चमे चतुश्चत्वारिꣳशच्चमेऽष्टाचत्वारिꣳ
शच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०) ॥ त्र्यविश्चमे
त्र्यवीचमे दित्यवाट् चमे दित्यौहीचमे पञ्चाविश्चमे
पञ्चावीचमे त्रिवत्सश्चमे त्रिवत्साचमे तुर्य्यवाट्चमे तुर्य्यौहीचमे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २६ ॥ पष्ठुवाट् चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमे
व्वशाचमऽऋषभश्च्चमे व्वेहच्चमेऽनड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयज्ञेन
कल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ (न०) ॥ व्वाजायस्वाहाप्प्रसवायस्वाहा
ऽपिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाऽहर्प्पतयेस्वाहा
ह्नेमुग्धायस्वाहामुग्धायव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विनꣳशिन
ऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहाभुवनस्यपतये
स्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्मित्त्राय
यन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्वाव्वृष्ट्यैत्वाप्प्रजानान्त्वाधिपत्त्याय ॥ २८ ॥
आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्प्राणोयज्ञेनकल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ
श्श्रोत्रंयज्ञेन कल्प्पताव्वाग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनोयज्ञेनकल्प्पता
मात्माऽयज्ञेनकल्प्पताम्ब्रह्मायज्ञेन कल्प्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्पता
ꣳस्वर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्पृष्ठꣳयज्ञेनकल्प्पताय्यज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्तोमंश्च्च यजुंश्च्च ऽऋक्च्च सामंचबृहच्चांरथन्तरञ्चं ॥ स्वंर्द्देवा ऽअगन्मामृतांऽअभूमप्प्रजापतेंः प्प्रजाऽअंभूम व्वेट्स्वाहां ॥ २९ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ शान्त्यध्यायः

हरिंः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपंद्येमनोयजुंः प्प्रपंद्येसामंप्प्राण म्प्रपंद्ये चक्षुंः श्श्रोत्रम्प्रपंद्ये ॥ व्वागोजंःसहौजोमयिं प्प्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मेंछिद्द्रञ्चक्षुंषोहृदंयस्यमनंसोव्वातिं तृण्णम्बृहस्प्पतिंर्म्मेतद्दंधातु ॥शन्नोंभवतु भुवंनस्ययस्प्पतिंः ॥ २ ॥ भूर्ब्भुवः स्वः । तत्संवितुर्व्वरेंण्यम्भर्गोंदेवस्यंधीमहि ॥ धियोयोनंःप्प्रचोदयांत् ॥ ३ ॥ कयांनश्चित्रऽआभुंवदूती सदावृंधःसखां ॥ कयाशचिंष्ठयाव्वृता ॥ ४ ॥ कस्त्वांसत्यो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मदानाम्मंहिष्ठोमत्सदन्धसः ।दृढाचिदारुजेव्वसु ॥ ५ ॥
अभीषुणःसखीनामविताजरितृणाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥
कयात्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृब्भ्य
ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति ॥ शन्नोऽअस्तुद्द्विपदेश
ञ्चतुष्प्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रःशंव्वरुणःशन्नोभवत्वर्य्यमा ॥
शन्नऽइन्द्रो बृहस्प्पतिःशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः ॥ ९ ॥ शन्नोव्वातः
पवताᳬशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽ
अभिवर्षतु ॥ १० ॥ अहानिशम्भवन्तुनःशᳬरात्रीःप्प्रतिधीयताम् ॥
शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या ॥ शन्नऽ
इन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः ॥ ११ ॥
शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योर
भिस्रवन्तुनः ॥ १२ ॥ स्योना पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्छानꣳशर्म्म सप्प्रथाꣳ ॥ १३ ॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान
ऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥ योवꣳशिव
तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥ १५ ॥ तस्म्मा
ऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ ॥ आपोजनयथाचनꣳ ॥ १६ ॥
द्यौःशान्ति रन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापꣳशान्तिरो
षधयꣳशान्तिः ॥ व्वनस्प्पतयꣳशान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्ति
र्ब्रह्मशान्तिꣳसर्व्वꣳशान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्ति
रेधि ॥ १७ ॥ दृतेदृꣳहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानि
समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥
मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृतेदृꣳहमा । ज्ज्योक्क्तेसन्दृशि
जीव्व्यासञ्ज्योक्क्तेसन्दृशिजीव्व्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्ते
हरसेशोचिषेनमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे ॥ अन्न्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव ॥ २० ॥ नमस्तेऽअस्तुविद्युते
नमस्तेस्तनयित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतꣳ स्वः समीहसे ॥ २१ ॥
यतोयतꣳ समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽ
भयन्नꣳ पशुभ्यः ॥ २२ ॥ सुमित्रियानऽआपऽओषधयꣳ
सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मः ॥ २३ ॥
तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेम
शरदः शतꣳ शृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाꣳ
स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥ २४ ॥

इति शान्त्यध्यायः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरिः ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिन स्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो
बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मंनाय नमंः ॥ ६ ॥
अघोरेंभ्यो ऽथघोरेंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो
नमंस्ते ऽअस्तु रुद्ररूंपेभ्यः ॥ ७ ॥ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं
धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयांत् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः
सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिंपतिर्ब्रह्मणो ऽधिंपतिर्ब्रह्मां शिवो में ऽअस्तु
सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥

ॐ शिवोनामांसिस्वधिंतिस्तेपितानमंस्ते ऽअस्तुमामांहिंसीः ॥
निवंर्त्तयाम्म्यायुंषे ऽन्नाद्यांयप्प्रजननांयरायस्प्पोषांय
सुप्रजास्त्वायंसुवीर्य्यांय ॥ १० ॥
ॐ विश्वांनिदेवसवितर्दुरितानिपरांसुव ॥ यद्भद्रन्तन्न ऽ ८५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसुव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्ति
रापꣳ शान्ति रोषधयꣳ शान्तिः ॥ व्वनस्पतयꣳ शान्तिर्व्विश्वे
देवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिꣳ सर्व्वꣳ शान्तिꣳ शान्तिरेवशान्तिꣳ
सामाशान्ति रेधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाᳪ रसो
यत्साम सर्वेषामेवैन मेतद्वेदानाᳪ रसेनाभिषिञ्चति ॥ १३ ॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनेनश्रीरुद्राभिषेककर्मणाश्रीभवानी शङ्कर महारुद्रः प्रीयतां न मम ।

ॐ साम्ब सदाशिवार्पणमस्तु ।

इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Santipur

Dihira

Bafka

Assam

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh